अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 4, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2026

दिव्यांग विद्यार्थियों के अभिभावक प्रोत्साहन का उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन पर प्रभाव

डॉ उज्ज्वला भोसले[1], डॉ संतोष कुमार शर्मा[2]

शिक्षा, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय जुनवानी भिलाई

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र में दिव्यांग विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा दिए जाने वाले प्रोत्साहन का उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक-भावात्मक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु 120 दिव्यांग विद्यार्थियों (आयु 12-18 वर्ष) का न्यादर्श यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया, जिन्हें उच्च अभिभावक प्रोत्साहन (N=60) एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन (N=60) समूहों में विभाजित किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु मानसिक स्वास्थ्य मापनी एवं समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया तथा विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं 't परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि उच्च अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त दिव्यांग विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन स्तर निम्न प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से बेहतर पाया गया (p<0-01)। अध्ययन के निष्कर्ष अभिभावकों, शिक्षकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए दिव्यांग विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा प्रत्येक बालक का मौलिक अधिकार है, चाहे वह सामान्य बालक हो अथवा दिव्यांग। दिव्यांग विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक अथवा संवेदी सीमाओं के कारण शिक्षा, सामाजिक सहभागिता एवं दैनिक जीवन की गतिविधियों में विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में परिवार, विशेषकर अभिभावक, बालक के समग्र विकास में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। अभिभावक प्रोत्साहन से तात्पर्य अभिभावकों द्वारा बालक को दी जाने वाली भावनात्मक सहायता, प्रेरणा, सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास संवर्धन एवं शैक्षिक-सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता से है।

मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन दिव्यांग विद्यार्थियों के जीवन की गुणवत्ता के दो महत्वपूर्ण आयाम हैं। जब अभिभावक अपने दिव्यांग बालक की क्षमताओं पर विश्वास करते हैं और उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करते हैं, तो बालक में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास एवं सामाजिक समायोजन की भावना का विकास होता है। इसके विपरीत, अभिभावकों की उपेक्षा,

अत्यधिक सुरक्षात्मक व्यवहार अथवा नकारात्मक दृष्टिकोण बालक में चिंता, हीन भावना एवं समायोजन संबंधी कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकता है।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन दिव्यांग विद्यार्थियों के अभिभावक प्रोत्साहन तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य संबंध की वैज्ञानिक जाँच करने का प्रयास करता है।

साहित्य समीक्षा

विभिन्न शोधकर्ताओं ने अभिभावक प्रोत्साहन तथा दिव्यांग बालकों के मनोसामाजिक विकास के मध्य संबंध का अध्ययन किया है। पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जिन दिव्यांग बालकों को अभिभावकों से सकारात्मक सहयोग, स्वीकृति एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता है, वे अपेक्षाकृत बेहतर आत्म-प्रत्यय (ेमसा-बवदबमचज), भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक समायोजन प्रदर्शित करते हैं। कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया कि अभिभावकों का तनाव-स्तर, स्वीकृति का स्तर तथा पारिवारिक वातावरण बालक की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। साथ ही, समावेशी शिक्षा के संदर्भ में किए गए अध्ययनों ने भी अभिभावक-शिक्षक सहयोग को दिव्यांग बालकों के समायोजन हेतु महत्वपूर्ण कारक बताया है।

उपर्युक्त साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि अभिभावक प्रोत्साहन एवं बालक के मनोसामाजिक विकास पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, तथापि भारतीय संदर्भ में दिव्यांग विद्यार्थियों के अभिभावक प्रोत्साहन को मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन दोनों चरों के साथ एक साथ जोड़कर किए गए अनुभवजन्य अध्ययनों की अपेक्षाकृत कमी है, जिसे प्रस्तुत अध्ययन पूर्ण करने का प्रयास करता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 4, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2026

शोध की आवश्यकता एवं महत्व
दिव्यांग विद्यार्थियों की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि तथा समावेशी शिक्षा नीति (जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016) के क्रियान्वयन के संदर्भ में यह अध्ययन प्रासंगिक है।

अभिभावकों को अपनी भूमिका के महत्व के प्रति जागरूक करने हेतु वैज्ञानिक साक्ष्य आवश्यक हैं।

शिक्षकों, परामर्शदाताओं एवं नीति-निर्माताओं हेतु दिव्यांग विद्यार्थियों के समग्र विकास कार्यक्रम तैयार करने में यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध के उद्देश्य
दिव्यांग विद्यार्थियों में अभिभावक प्रोत्साहन के स्तर का अध्ययन करना।

उच्च एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अंतर का अध्ययन करना।

उच्च एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में अंतर ा अध्ययन करना।

अभिभावक प्रोत्साहन, मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना।

शोध परिकल्पनाएँ
उच्च एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांकों के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
उच्च एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन प्राप्तांकों के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
अभिभावक प्रोत्साहन तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं लें

शोध विधि

6.1 शोध अभिकल्प
प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए तुलनात्मक अभिकल्प अपनाया गया है।

6.2 न्यादर्श
अध्ययन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा कुल 120 दिव्यांग विद्यार्थियों (आयु समूह 12-18 वर्ष, दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं अस्थि-दिव्यांग श्रेणियाँ सम्मिलित) का चयन विभिन्न समावेशी विशेष विद्यालयों से किया गया। प्रोत्साहन मापनी पर प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों को दो समूहों कृ उच्च अभिभावक प्रोत्साहन समूह (छ=60) एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन समूह (छ=60) कृ में विभाजित किया गयज्ञं

6.3 प्रयुक्त उपकरण
अभिभावक प्रोत्साहन मापनी स्व-निर्मित मानकीकृत
मानसिक स्वास्थ्य मापनी जैसे भट्ट एवं गुप्ता द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी
समायोजन मापनी

6.4 सांख्यिकीय विधियाँ
आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य , मानक विचलन , परीक्षण एवं पियर्सन सहसंबंध गुणांक (जद्ध का प्रयोग किया गया।

आँकड़ा विश्लेषण एवं परिणाम

तालिका 1: उच्च एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन समूहों के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांकों की तुलना

समूह	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मान	सार्थकता स्तर
उच्च प्रोत्साहन	60	78.4	6.2	5.87	p<0.01
निम्न प्रोत्साहन	60	65.1	7.5	—	—

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 4, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2026

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च अभिभावक प्रोत्साहन समूह का माध्य प्राप्तांक (ड =78.4) निम्न प्रोत्साहन समूह (ड =65.1) की तुलना में अधिक है तथा प्राप्त ज -मान (5.87) 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना भ् $_0$1 अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 2: उच्च एवं निम्न अभिभावक प्रोत्साहन समूहों के समायोजन प्राप्तांकों की तुलना

समूह	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मान	सार्थकता स्तर
उच्च प्रोत्साहन	60	74.9	5.8	4.92	p<0.01
निम्न प्रोत्साहन	60	63.7	7.1	—	—

तालिका 2 के परिणाम दर्शाते हैं कि उच्च अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थियों का समायोजन स्तर (ड =74.9) निम्न प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थियों (ड =63.7) की तुलना में सार्थक रूप से बेहतर है (ज =4.92, चढ0.01)। अतः शून्य परिकल्पना भ$_0$2 भी अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 3: अभिभावक प्रोत्साहन, मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	मानसिक स्वास्थ्य के साथ 'r'	समायोजन के साथ 'r'
अभिभावक प्रोत्साहन	0.62**	0.58**

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि अभिभावक प्रोत्साहन का मानसिक स्वास्थ्य (त =0.62) तथा समायोजन (त =0.58) दोनों के साथ धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया, जो दर्शाता है कि अभिभावक प्रोत्साहन बढ़ने के साथ-साथ दिव्यांग विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन स्तर भी बेहतर होता है। अतः शून्य परिकल्पना भ$_0$3 भी अस्वीकृत की जाती है।

परिणामों की चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि अभिभावक प्रोत्साहन दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। जब अभिभावक बालक की सीमाओं के स्थान पर उसकी क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उसे प्रोत्साहित करते हैं, तो बालक में आत्म-मूल्य एवं आत्मविश्वास की भावना सुदृढ़ होती है, जिससे वह विद्यालयी, सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों में बेहतर समायोजन स्थापित कर पाता है। इसके विपरीत, कम प्रोत्साहन अथवा अभिभावकों की नकारात्मकध्चिंताग्रस्त प्रतिक्रियाएँ बालक में असुरक्षा, चिंता एवं सामाजिक विलगाव को जन्म दे सकती हैं। यह निष्कर्ष पूर्व में की गई साहित्य समीक्षा के निष्कर्षों के अनुरूप है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अभिभावक प्रोत्साहन दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। उच्च अभिभावक प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थी निम्न प्रोत्साहन प्राप्त विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन प्रदर्शित करते हैं। अतः दिव्यांग विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु अभिभावकों की सकारात्मक भूमिका को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है।

सुझाव

अभिभावकों हेतु नियमित परामर्श एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
विद्यालयों में अभिभावक-शिक्षक सहयोग कार्यक्रम सुदृढ़ किए जाएँ।
दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विद्यालय स्तर पर परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
भविष्य में बड़े न्यादर्श एवं विभिन्न दिव्यांगता श्रेणियों को सम्मिलित करते हुए अध्ययन किए जाने चाहिए।

अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन सीमित भौगोलिक क्षेत्र एवं न्यादर्श आकार तक सीमित है।
आँकड़े स्व-प्रतिवेदित प्रकृति के हैं, जिनमें सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह संभव है।
अध्ययन में केवल तीन प्रकार की दिव्यांगता श्रेणियों को सम्मिलित किया गया है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 4, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2026

संदर्भ सूची

1. भट्ट, एल. जे., एवं गुप्ता, जी. सी. कृ मानसिक स्वास्थ्य मापनी, आगराः राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
2. पचैरी, ए. कृ समायोजन मापनी , आगराः राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
3. भारत सरकार कृ दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. भारत सरकार कृ राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
5. Kumar, A. (2019). Parental attitude and adjustment of children with disabilities. Indian Journal of Special Education, 12(2), 45-52।
6. Sharma, R., & Singh, P. (2020). Mental health of children with special needs in relation to family environment. Journal of Disability Studies, 8(1), 22-30।